हिन्दी कहानी लेखन और संजीव

डॉ. पी.एम.आर. जयंती
हिंदी में प्राध्यापक
एसकेआर और एसकेआर सरकार। महिलाओं के लिए कॉलेज (ए) कडप्पा.

कहानी की कहानी अत्यंत प्राचीन है। कहानी का संबंध मानव के आरंभ के साथ जोड़ा जाता है। मनुष्य के जन्म और विकास के साथ ही कहानी का जन्म और विकास भी होता गया। जब से मनुष्य भाषा का प्रयोग करने लगा तब से कहानी कहने- सुनने की प्रवृत्ति चली आ रही है। कहानी आरंभिक काल से ही मनोरंजन का साधन रही। इसके माध्यम से नैतिक शिक्षा दी जाती थी। उदात्त मानवीय मूल्यों का विकास असानी से किया जा सकता है। कहानी बड़ी सरलता से लोगों की समझ में आती है और उनको विस्तृत रूप से प्रभावित भी करती है। हिन्दी कहानी साहित्य के पूर्व रूप को जातक कथाएँ, पंचतंत्र, हितोपदेश, बृहत्कथा, चौरासीवैष्णवों की वार्ता आदि से जोड़ा जाता है। परंतु आज कहानी का जो रूप देखते हैं वह पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित एक विधा है। वस्तुतः आधुनिक हिन्दी कहानी का प्राथमिक स्वरूप हम बंगला से अनूदित कहानियों में पाते हैं पश्चिम की अंग्रेजों की कहानियों के अनुकरण पर बंगला में 'गल्प' के रूप में कहानी की रचना आंरभ हुई और फिर बंगला से हिन्दी में इन कहानियों का रूपांतर हुआ।

हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास का आरंभ 1900 ई. के आस-पास माना जाता है। क्योंकि इससे पहले हिन्दी में कहानी जैसी किसी विधा का रूपायन नहीं हुआ था। हिन्दी में प्रथम कहानी को लेकर काफी मतभेद हैं। इंशा अल्लाखाँ की 'रानी केतकी की कहानी' या 'उदयभानुचरित' ही प्रथम कहानी मानी गयी। पर बाद में किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती' प्रथम कहानी मानी गयी। वह भी अमान्य सिद्ध हुई तो पं. रामचंद्र शुक्ल जी ने अपनी कहानी "ग्यारह वर्ष का समय" (सन् 1903) को ही प्रथम कहानी माना।

हिन्दी की प्रथम कहानी के अंतर्गत जिन कहानियों का उल्लेख किया गया है, उनके अलावा इस युग में लिखी गई अन्य प्रसिद्ध कहानियाँ हैं माधवप्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता, लाला भगवान दीन की 'प्लेग की चुडैल', वृंदवनलाल वर्मा की 'राखीबंद भाई' तथा 'नकली किला, विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'रक्षाबंधन', ज्वालादत्त शर्मा की 'मिलन' आदि हैं। वस्तुतः 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन से हिन्दी में मौलिक कहानियों का विकास परिलक्षित होता है। सरस्वती पत्रिका ने हिन्दी कहानी को नया मोड दिया। इससे हिन्दी कहानी को गति मिली। इसी के साथ साथ सन् 1909 ई में काशी में 'इंदु' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसी पत्रिका के साथ जयशंकर प्रसाद ने कहानी साहित्य में प्रवेश किया। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ 'आग' चंदा, गुलाम, चितौर उद्धार; आदि इंदु में प्रकाशित हुई। सन् 1912 ई में इनका पहला कहानी संग्रह 'छाया' नाम से प्रकाशित हुआ। राधिकारमण प्रसाद की कहानी 'कानों में कंगना' भी इंदु में सन् 1913 ई में प्रकाशित हुई।

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युगप्रवर्तक कहानीकार माने जाते हैं। प्रारंभ में वे नवाबराय के नाम से उर्द में लिखा करते थे। उर्द में लिखा हुआ उनका कहानी संग्रह "सोजे वतन" 1907 ई में प्रकाशित हुआ था। जिसे ब्रिटीश सरकार ने जब्त कर लिया था इसके पश्चात वे हिन्दी में 'प्रेमचंद' के नाम से लिखने लगे और उनका यह नाम कथा साहित्य में अहम हो गया। उनकी पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' सन् 1916 ई में प्रकाशित हुई और अंतिम कहानी 'कफन' 1936 ई में। मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने जीवन काल में लगभग 300 कहानियों की रचना की, जो 'मानसरेवर' के आठ भागों में प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी कहानी में प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी की काया ही पलट गई। "प्रेमचंद का आविर्भाव हिन्दी कहानी साहित्य की एक अपूर्व घटना थी। उन्होंने सामाजिक मानव की सामान्य और विशिष्ट परिस्थितियों, मनोवृत्तियों और समस्याओं का अंकन कर हिन्दी कहानी को एक निश्चित यथार्थवादी दिशा और गति प्रदान की।" जयशंकर प्रसाद इस युग के दूसरे महान कहानीकार हैं। "ग्राम" इनकी सर्वप्रथम मैलिक कहानी है। इस युग में चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने "उसने कहा था", "सुखमय जीवन" और "बुद्ध का कांटा" जैसी कहानियाँ लिखीं। इन कहानियों के द्वारा गुलेरी जीने हिन्दी कहानी में अपना अलग स्थान बनाया। विश्वंभरनाथ शर्मा "कौशिक" तथा सुदर्शन ने प्रेमचंद से प्रभावित होकर कहानियाँ लिखी हैं तो चतुरसेन शास्त्री, राधाकृष्णदास तथा विनोद शंकर व्यास ने प्रसाद जी से प्रभावित होकर कहानियाँ लिखी। कौशिकजी ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी। प्रेमचंद युग के अन्य कहानीकारों में पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', जैनेंद्रकुमार तथा अज्ञेय उल्लेखनीय हैं। जैनेंद्र मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं। इन पर गाँधीवादी दर्शन का प्रभाव भी है। "अपना अपना भाग्य", "पत्नी", "हत्या", "खेल", "जाह्नवि", "पाजेब", "एकदिन" आदि जैनेंद्र की प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। अज्ञेय भी मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं। "रोज", "कडियाँ", "अमलवल्लरी", "मैन", "हार सिंगार" आदि उनकी बहु चर्चित कहानियाँ हैं। इस संदर्भ में डॉ. नगेंद्र का मंतव्य है "प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को महबूत नींव ही नहीं दी, उसे कलात्मक ऊंचाई भी प्रदान की। कौशिक, सुदर्शन, उग्र, राहुल आदि ने कहानी को सामाजिक पीडा की अभिव्यक्ति का सफल माध्यम बनाया। जैनेंद्र और अज्ञेय ने मनोविश्लेषण को आधार बनाकर नवीन प्रयोग किए, जहाँ से हिन्दी कहानी की एक नवीन धारा का सूत्रपात हुआ। तात्पर्य यह कि इस युग में हिन्दी कहानी अपने विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं को पार कर वहाँ पहँची जहाँ से हमें इसके श्रेष्ठ रूप के दर्शन होने लगते हैं।

प्रेमचंदोत्तर युग में हिन्दी कहानी का बहुमुखी विकास हुआ है। इसी युग में भारत को आजादी मिली। जीवन तेज गति से बदलने लगा। इस परिवर्तन का प्रभाव कहानी पर भी पड़ा। वैसे तो कहानी इस काल की केंद्रीय विधा रही। अतः कहानी ने जीवन और जगत के विविध पक्षों को अपनी परिधि में समेटने का प्रयास किया। प्रेमचंदोत्तर युग के कहानीकारों में सब से ज्यादा उल्लेखनीय कहानीकार यशपाल और उपेंद्रनाथ 'अश्क' हैं। ये दोनों कहानीकार प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ानेवाले भी हैं। हिन्दी कहानी आंदोलनों में नई कहानी सब से प्रमुख आंदोलन है। यह आंदोलन सन् 1950 के आस-पास विकसित हुआ है। जीवन यथार्थ को नई कहानी एक विलक्षण ढंग से प्रस्तुत करती है। नई कहानी में भोगे हुए यथार्थ को अधिक महत्व दिया गया। सर्वप्रथम दुष्यंतकुमार ने 'कल्पना' पत्रिका में एक लेख में नई नाम से कहानी आंदोलन का नामकरण किया। "कहानी" पत्रिका ने भी इसमें अपना योगदान दिया। इसके संपादक भौरव प्रसाद गुप्त के संपादन में 1956 के नव-वर्षांक में इस आंदोलन को प्रतिष्ठा मिली। नई कहानी में यथार्थ के प्रति नया दृष्टिकोण रहा।नई कहानी के समर्थकों के लिए आधुनिकता प्रतिपल परिवर्तित जीवन की यथार्थता है। नई कहानी बड़े महत्वपूर्ण सामाजिक स्थाईत्व को स्वीकार करती है। नई कहानी अपने अपने

मनुष्य केंद्रित के कारण उसे मानव के व्यवहार क्षेत्र के रूप में ही देखती है। नई कहानी ने अपने संवेदनाओं को मानवीय संबंधों के क्षेत्र में संबंध रखा। इसमें आधुनिकता, महानगर बोध, अंचलिकता सभी का समोवेश है। नई कहानी पुरानी कहानी से अलग है। नई अपने परिवेश के प्रति अत्यंत संवेदनाशील है। नई कहानी में धर्म और ईश्वर का एक अलग ही संदर्भ मिल जाता है। इसी प्रकार परिवार और समाज स्त्री पुरुष संबंध और व्यक्तिगत कुंठा इन कहानीकारों में नया अर्थ लेकर आती है। इस संदर्भ में गोपाल राय लिखते हैं - "नई कहानी आंदोलन के दौरान इस बात पर अत्यधिक जोर दिया गया कि स्वानुभूत संवेदना या विचार ही 'प्रामाणिक' और कहानी का आधार बन सकते हैं। नई कहानी में मूल्यों एवं मान्यताओं में परिवर्तन के साथ-साथ विद्रोह भावना के लिए भी अभिव्यक्ति मिली है। महानगरीय जीवन तथा मध्यवर्गीय जीवन का बखूबी चित्रण किया गया। वातावरण सृष्टि की प्रधानता, पात्रों के नामों, वर्गों का सामान्यतया लोप पाया जाता है। भाषा में स्वाभाविकता, बिंबात्मकता, प्रतीकात्मक प्रयोग आदि नई कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ हैं। कहानी की परंपरागत धारणाओं को अस्वीकार करके लिखी गई कहानी को 'अकहानी' का नाम दिया गया है। अकहानी के शीर्षक से श्याममोहन श्रीवात्सव तथा सुरेंद्र सन् 1970 के आस पास लिखी गई कहानी को समकालीन कहानी के नाम से जानी जाती है। 'समकालीन' शब्द अंग्रेजी के 'कांटेपररी' का समानार्थी है। इस शब्द को विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने ढंग से व्याख्यायित करने की चेष्टा की। समकालीनता के संदर्भ में डॉ. नरेंद्र मोहन के विचार हैं "समकालीन एक ठहरी हुई गतिहीन और जड़ स्थिति नहीं है बल्कि ठहरात, गतिहीनता ऐतिहासिक प्रक्रिया और जड़ता को सख्ती और निर्ममता से जोड़ने वाली यह गतिमान ऐतिहासिक प्रक्रिया और चेतना है। समकालीन कहानी का अर्थ जो उस काल में लिसी गयी कहानियों से है जिनमें समय, समाज और जीवन की आत्मा तथा मानसिकता का संपूर्ण साक्षात्कार होता है। वास्तव में समकालीन कहानी का अनुशीलन अपने समय व समाज का अनुशीलन है।

समकालीन कहानी का क्षेत्र बहुत व्यापक है। यह पुरानी कहानियों से भिन्न हैं। पुरानी कहानी में अलौकिक एवं प्राकृतिक तत्वों की प्रधानता पायी जाती है, किंतु समकालीन कहानी में लौकिक एवं जीवन यथार्थ का चित्रण होता है। समकालीन कहानी भावनात्मक संबंधों की अपेक्षा संबंधों की विसंगति, विडंबना, जटिलता, संघर्ष, तनाव, कुंठा, घुटन आदि का सजीव चित्रण करती नजर आती है। समकालीन महत्वपूर्ण कहानीकारों में संजीव, सृजय, स्वयंप्रकाश, अखिलेश, संजय खाती, उदय प्रकाश, शैलेंद्र सागर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जनवादी कहानी का व्यवस्थित आरंभ आठवें दशक से माना जाता है। वस्तुतः यह कहानी आंदोलन समूचे जनवादी आंदोलन से जुड़ा हुआ है। "सन् 1977 ई. में 'दिल्ली विश्व विद्यालय' में 'जनवादी विचारमंच' की स्थापना हुई।

सक्रिया कहानी आंदोलन के प्रवर्तक राकेश वत्स माने जाते है। इन्होंने 'मंच' नामक पत्रिका के द्वारा सक्रिया कहानी का सूत्रपात किया है। सक्रिय कहानी व्यक्तिवादी दानवीय प्रवृत्तियों का विरोध करते हुए मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल देती है। वह शोषण का विरोध करती है और साधारण आदमी के हित के लिए प्रयत्नशील है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि संजीव एक जिंदादिल कथाकार हैं। उनकी जिंदादिली, प्रतिबद्धता हर कहानी में परिलक्षित होती है। इसी प्रतिबद्धता के कारण हिन्दी कहानी के विकास एवं कहानी कला के योगदान में श्री 'संजीव' का सुनिश्चित एवं प्रतिष्ठित स्थान है। कहानी की परंपरा अत्यंत प्राचीन होते हुए भी आज यह साहित्य की एक लोकप्रिय, सशक्त एवं जीवंत, विधा मानी जाती है। हिन्दी कहानी की विकास यात्रा हिन्दी गद्य के विकास साथ साथ आरंभ होती है। हिन्दी में कहानी विधा आधुनिक युग की देन है। कहानी की सृजन - प्रेरणा और रचना प्रक्रिया समय के साथ निरंतर बदलती और परिवर्तित होती रहती है। हिन्दी कहानी ने अपने अल्प समय में ही विकास से कई चरण तय किये हैं। यह हमेशा से संभावना भरी महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा विशेष के लिए रूढ़ हो गया है। कथ्य और शिल्प के धरातल पर भी यह विधा अत्यंत रोचक एवं प्रभावशाली बनी हुई है। इस के माध्यम से सम-सामयिक जीवन की कतिपय समस्याओं एवं प्रेरणाओं की अभिव्यक्ति हुई है।

****